यज्ञ–विध्वंस के पश्चात् दक्ष प्रजापति द्वारा की गयी भगवान् शंकर की स्तुति[1]

यज्ञविध्वंस के पश्चात् वीरभद्र की सलाह के फलस्वरूप दक्ष ने भगवान् शिव की शरण ग्रहण की और उन्हें प्रणाम कर सहस्त्र नामों से उनकी स्तुति की। इसी पृष्ठभूमि में भीष्म एवं युद्धिष्ठिर के संवाद को यहाँ मूलरूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। पूर्वोक्त दो शिव सहस्त्रनामों की भाँति इसका भी उसी प्रकार का महत्त्व है। सहस्त्रनाम के अन्त में इस सहस्त्रनाम के माहात्म्य का भी वर्णन किया गया है।

युधिष्ठिर उवाच

यैर्नामधेयैः स्तुतवान् दक्षो देवं प्रजापतिः ।
वक्तुमर्हसि मे तात श्रोतुं श्रद्धा ममानघ ।। 67

युधिष्ठिरने पूछा - तात! निष्पाप पितामह! प्रजापति दक्ष ने जिन नामों द्वारा महादेवजी की स्तुति की थी, उनका मुझसे वर्णन कीजिये। उन्हें सुनने के लिये मेरे हृदय में बड़ी श्रद्धा है।

भीष्म उवाच

श्रूयतां देवदेवस्य नामान्यद्भुतकर्मणः ।
गूढव्रतस्य गुह्यानि प्रकाशानि च भारत ।। 68

भीष्मजी कहते हैं–भरतनन्दन! अद्भुत कर्म करनेवाले गूढ़ व्रतधारी देवाधिदेव महादेवजी के कुछ नाम गोपनीय हैं और कुछ प्रकाशित हैं। तुम उन सब को सुनो।

नमस्ते देवदेवेश देवारिबलसूदन ।
देवेन्द्रबलविष्टम्भ देवदानवपूजित ।। 69

(दक्ष बोले)–देवदेवेश्वर! आपको नमस्कार है। आप देववैरी दानवों की सेना के संहारक और देवराज इन्द्र की शक्ति को भी स्तम्भित करनेवाले हैं। देवता और दानव–सबने आपकी पूजा की है।

सहस्राक्ष विरूपाक्ष त्र्यक्ष यक्षाधिपप्रिय।
सर्वतःपाणिपादान्त सर्वतोऽक्षिशिरोमुख।। 70

आप सहस्त्रों नेत्रों से युक्त होने के कारण सहस्त्राक्ष हैं। आपकी इन्द्रियाँ सबसे विलक्षण अर्थात् परोक्ष विषय को भी प्रत्यक्ष करनेवाली हैं, इसलिये आपको विरूपाक्ष कहते हैं। आप त्रिनेत्रधारी होने के कारण त्र्यक्ष कहलाते हैं। यक्षराज कुबेर के भी आप प्रिय (इष्टदेव) हैं। आपके सब ओर हाथ और पैर हैं तथा सब ओर नेत्र, मस्तक और मुख हैं।

---

1. यह स्तुति(सहस्त्रनाम) थोड़े–बहुत पाठभेद के साथ ब्रह्मपुराण(40/2–100), वायुपुराण(1/30/180–284) तथा(दक्ष की बजाय 'वेन' द्वारा की गयी उपर्युक्त स्तुति) वामनपुराण(सरो माहा.26/63–163) में मिलती है।

सर्वतःश्रुतिमँल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठसि।
शङ्कुकर्ण महाकर्ण कुम्भकर्णार्णवालय।।
गजेन्द्रकर्ण गोकर्ण पाणिकर्ण नमोऽस्तु ते।

आपके कान भी सब ओर हैं। संसार में जो कुछ है, सबको व्याप्त करके आप स्थित हैं। शङ्कुकर्ण, महाकर्ण, कुम्भकर्ण, अर्णवालय, गजेन्द्रकर्ण, गोकर्ण और पाणिकर्ण-ये सात पार्षद् आपके ही स्वरूप हैं। इन सबके रूप में आपको नमस्कार है।

शतोदर शतावर्त शतजिह्व नमोऽस्तु ते।। 72
गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः।
ब्रह्माणं त्वा शतक्रतुमूर्ध्वं खमिव मेनिरे।। 73

आपके सैंकड़ों उदर, सैकड़ों आवर्त और सैकड़ों जिह्वाएँ होने के कारण आप क्रमशः शतोदर, शतावर्त और शतजिह्व नाम से प्रसिद्ध हैं। आपको प्रणाम है। गायत्री-मन्त्र का जप करनेवाले द्विज आपकी ही महिमा का गान करते हैं और सूर्योपासक सूर्य के रूप में आपकी ही आराधना करते हैं। ऋषिगण आपको ही ब्रह्मा, शतक्रतु इन्द्र और आकाश के समान सर्वोच्च पद मानते हैं।

मूर्तौ हि ते महामूर्ते समुद्राम्बरसंनिभ।
सर्वा वै देवता ह्यस्मिन् गावो गोष्ठ इवासते।। 74

समुद्र और आकाश के समान अपार, अनन्त रूप धारण करनेवाले महामूर्तिधारी महेश्वर! जैसे गोशाला में गौएँ निवास करती हैं, उसी प्रकार आपकी भूमि, जल, वायु, अग्नि, आकाश, सूर्य, चन्द्रमा एवं यजमानरूप आठ प्रकार की मूर्तियों में सम्पूर्ण देवताओं का निवास है।

भवच्छरीरे पश्यामि सोममग्निं जलेश्वरम्।
आदित्यमथ वै विष्णुं ब्रह्माणं च बृहस्पतिम्।। 75

मैं आपके शरीर में सोम, अग्नि, वरुण, सूर्य, विष्णु, ब्रह्मा तथा बृहस्पति को भी देख रहा हूँ।

भगवान् कारणं कार्यं क्रिया करणमेव च।
असतश्च सतश्चैव तथैव प्रभवाप्ययौ।। 76

आप ही कारण, कार्य, क्रिया(प्रयत्न) और करण हैं । सत् और असत् पदार्थों की उत्पत्ति और प्रलय के स्थान भी आप ही हैं।

नमो भवाय शर्वाय रुद्राय वरदाय च।
पशूनां पतये नित्यं नमोऽस्त्वन्धकघातिने।। 77

आप सबके उद्भव का स्थान होने से भव, संहार करने के कारण शर्व, 'रु' अर्थात् पाप एवं दुःख को दूर करने से रुद्र, वरदाता होने से वरद तथा पशुओं (जीवों) के पालक होने के कारण सदा

पशुपति कहलाते हैं। आपने ही अन्धकासुर का वध किया है, इसलिये आपका नाम अन्धकघाती है। आपको बारंबार नमस्कार है।

त्रिजटाय त्रिशीर्षाय त्रिशूलवरपाणिने।
त्र्यम्बकाय त्रिनेत्राय त्रिपुरघ्नाय वै नमः।। 78

आप तीन जटा और तीन मस्तक धारण करनेवाले हैं। आपके हाथ में श्रेष्ठ त्रिशूल शोभा पाता है। आप त्र्यम्बक, त्रिनेत्रधारी तथा त्रिपुरासुर का विनाश करनेवाले हैं। आपको नमस्कार है।

नमश्चण्डाय कुण्डाय अण्डायाण्डधराय च।
दण्डिने समकर्णाय दण्डिमुण्डाय वै नमः।। 79

आप दुष्टों पर अत्यन्त क्रोध करने के कारण चण्ड हैं। कुण्ड में जलकी भाँति आपके उदर में सम्पूर्ण जगत् स्थित है, इसलिये आपको कुण्ड कहते हैं। आप अण्ड(ब्रह्माण्डस्वरूप) और अण्डधर(ब्रह्माण्ड को धारण करनेवाले) हैं। आप दण्डधारी(सबको दण्ड देनेवाले) और समकर्ण(सबकी समान रूप से सुननेवाले) हैं। दण्डधारण करके मूँड़ मुँड़ानेवाले संन्यासी भी आपके ही स्वरूप हैं, इसलिये आपका नाम दण्डिमुण्ड है। आपको नमस्कार है।

नमोर्ध्वदंष्ट्रकेशाय शुक्लायावतताय च।
विलोहिताय धूम्राय नीलग्रीवाय वै नमः ।। 80

आप की दाढ़ें बड़ी-बड़ी और सिर के बाल ऊपर की ओर उठे हुए हैं, इसलिये आप ऊर्ध्वदंष्ट्र तथा ऊर्ध्वकेश कहलाते हैं। आप ही शुक्ल (विशुद्ध ब्रह्म) और आप ही अवतत (जगत् के रूप में विस्तृत) हैं। आप रजोगुण को अपनाने पर विलोहित और तमोगुण का आश्रय लेने पर धूम्र कहलाते हैं। आपकी ग्रीवा में नीले रंग का चिह्न है, इसलिये आपको नीलग्रीव कहते हैं। आपको नमस्कार है।

नमोऽस्त्वप्रतिरूपाय विरूपाय शिवाय च।
सूर्याय सूर्यमालाय सूर्यध्वजपताकिने।। 81

आपके रूप की कहीं भी समता नहीं है, इसलिये आप अप्रतिरूप हैं। विविध रूप धारण करने के कारण आपका नाम विरूप है। आप ही परम कल्याणकारी शिव हैं। आप ही सूर्य हैं, आप ही सूर्यमण्डल के भीतर सुशोभित होते हैं। आप अपनी ध्वजा और पताका पर सूर्य का चिह्न धारण करते हैं। आपको नमस्कार है।

नमः प्रमथनाथाय वृषस्कन्धाय धन्विने।
शत्रुंदमाय दण्डाय पर्णचीरपटाय च।। 82

आप प्रमथगणों के अधीश्वर हैं। वृषभ के कंधों के समान आपके कंधे भरे हुए हैं। आप पिनाक धनुष धारण करते हैं। शत्रुओं का दमन करनेवाले और दण्डस्वरूप हैं। किरात या तपस्वी के रूप में

विचरते समय आप भोजपत्र और वल्कल-वस्त्र धारण करते हैं। आपको नमस्कार है।

नमो हिरण्यगर्भाय हिरण्यकवचाय च।
हिरण्यकृतचूडाय हिरण्यपतये नमः।। 83

हिरण्य(सुवर्ण) को उत्पन्न करने के कारण हिरण्यगर्भ कहलाते हैं। सुवर्ण के ही कवच और मुकुट धारण करने से आपको हिरण्यकवच और हिरण्यचूड कहा गया है। आप सुवर्ण के अधिपति हैं। आपको सादर नमस्कार है।

नमः स्तुताय स्तुत्याय स्तूयमानाय वै नमः।
सर्वाय सर्वभक्षाय सर्वभूतान्तरात्मने।। 84

जिनकी स्तुति हो चुकी है, वे आप हैं। जो स्तुति के योग्य हैं, वे भी आप हैं और जिनकी स्तुति हो रही है, वे भी आप ही हैं। आप सर्वस्वरूप, सर्वभक्षी और सम्पूर्ण भूतों के अन्तरात्मा हैं। आपको बारंबार नमस्कार है।

नमो होत्रेऽथ मन्त्राय शुक्लध्वजपताकिने।
नमो नाभाय नाभ्याय नमः कटकटाय च।। 85

आप ही होता और मन्त्र हैं। आपको नमस्कार है। आपकी ध्वजा और पताका का रंग श्वेत है। आपको नमस्कार है। आप नाभ(नाभि में सम्पूर्ण जगत् को धारण करनेवाले), नाभ्य(संसार-चक्र के नाभि-स्थान) तथा कट-कट(आवरण के भी आवरण) हैं। आपको नमस्कार है।

नमोऽस्तु कृशनासाय कृशाङ्गाय कृशाय च।
संहृष्टाय विहृष्टाय नमः किलकिलाय च।। 86

आपकी नासिका कृश (पतली) है, इसलिये आप कृशनस कहलाते हैं। आपके अवयव कृश होने से आपको कृशाङ्ग तथा शरीर दुबला होने से कृश कहते हैं। आप अत्यन्त हर्षोल्लास से परिपूर्ण, विशेष हर्ष का अनुभव करनेवाले और हर्ष की किल-किल ध्वनि हैं। आपको नमस्कार है।

नमोऽस्तु शयमानाय शयितायोत्थिताय च।
स्थिताय धावमानाय मुण्डाय जटिलाय च।। 87

आप समस्त प्राणियों के भीतर शयन करनेवाले अन्तर्यामी पुरुष हैं। प्रलयकाल में योगनिद्रा का आश्रय लेकर सोते और सृष्टि के प्रारम्भकाल में कल्पान्त निद्रा से जागते हैं। आप ब्रह्म-रूप से सर्वत्र स्थित और कालरूप से सदा दौड़नेवाले हैं। मूँड़ मुँड़ानेवाले संन्यासी और जटाधारी तपस्वी भी आपके ही स्वरूप हैं। आपको नमस्कार है।

नमो नर्तनशीलाय मुखवादित्रवादिने।
नाद्योपहारलुब्धाय गीतवादित्रशालिने।। 88

आपका ताण्डव-नृत्य बराबर चलता रहता है। आप मुख से शृङ्गी आदि बाजे बजाने में कुशल

हैं। कमलपुष्प की भेंट लेने के लिये सदा उत्सुक रहते हैं। गाने और बजाने की कला में तत्पर रहकर आप बड़ी शोभा पाते हैं। आपको प्रणाम है।

नमो ज्येष्ठाय श्रेष्ठाय बलप्रमथनाय च।
कालनाथाय कल्याय क्षयायोपक्षयाय च।। 89

आप अवस्था में सबसे ज्येष्ठ और गुणों में भी सबसे श्रेष्ठ हैं। आपने बल नामक दैत्य को इन्द्ररूप से मथ डाला था। आप काल के भी नियन्ता और सर्वशक्तिमान् हैं। महाप्रलय और अवान्तर-प्रलय भी आप ही हैं। आपको नमस्कार है।

भीमदुन्दुभिहासाय भीमव्रतधराय च।
उग्राय च नमो नित्यं नमोऽस्तु दशबाहवे।। 90

प्रभो! आपका अट्टहास भयंकर शब्द करनेवाली दुन्दुभि के समान जान पड़ता है। आप भीषण व्रत को धारण करनेवाले हैं। दस भुजाओं से सुशोभित होनेवाले उग्ररूपधारी आपको मेरा नित्य बारंबार नमस्कार है।

नमः कपालहस्ताय चितिभस्मप्रियाय च।
विभीषणाय भीष्माय भीमव्रतधराय च।। 91

आपके हाथ में कपाल है। चिता का भस्म आपको बहुत प्रिय है। आप सबको भयभीत करनेवाले और स्वयं निर्भय हैं तथा शम-दम आदि तीक्ष्ण व्रतों को धारण करते हैं। आपको नमस्कार है।

नमो विकृतवक्त्राय खड्गजिह्वाय दंष्ट्रिणे।
पक्वाममांसलुब्धाय तुम्बीवीणाप्रियाय च।। 92

आपका मुख विकृत है। जिह्वा खड्ग के समान है। आपका मुख दाढ़ों से सुशोभित होता है। आप कच्चे-पक्के फलों के गुद्दे के लिये लुभायमान रहते हैं। तुम्बी और वीणा आपको विशेष प्रिय हैं। आपको प्रणाम है।

नमो वृषाय वृष्याय गोवृषाय वृषाय च।
कटंकटाय दण्डाय नमः पचपचाय च।। 93

आप वृष (वृष्टिकर्ता), वृष्य (धर्म की वृद्धि करनेवाले), गोवृष (नन्दी) और वृष (धर्म) आदि नामों से प्रसिद्ध हैं । कटंकट (नित्य गतिशील), दण्ड (शासक) और पचपच (सम्पूर्ण भूतों को पचानेवाला काल) भी आपके ही नाम हैं। आपको नमस्कार है।

नमः सर्ववरिष्ठाय वराय वरदाय च।
वरमाल्यगन्धवस्त्राय वरातिवरदे नमः।। 94

आप सबसे श्रेष्ठ वरस्वरूप और वरदाता हैं। उत्तम वस्त्र, माल्य और गन्ध धारण करते हैं तथा भक्त को इच्छानुसार एवं उससे भी अधिक वर देनेवाले हैं। आपको प्रणाम है।

नमो रक्तविरक्ताय भावनायाक्षमालिने।
सम्भिन्नाय विभिन्नाय छायायातपनाय च।। 95

रागी और विरागी-दोनों जिनके स्वरूप हैं, जो ध्यान-परायण, रुद्राक्षकी माला धारण करनेवाले, कारणरूप से सबमें व्याप्त और कार्यरूप से पृथक्-पृथक् दिखायी देनेवाले हैं तथा जो सम्पूर्ण जगत् को छाया और धूप प्रदान करते हैं, उन भगवान् शंकर को नमस्कार है।

अघोरघोररूपाय घोरघोरतराय च।
नमः शिवाय शान्ताय नमः शान्ततमाय च।। 96

जो अघोर, घोर और घोर से भी घोरतर रूप धारण करनेवाले हैं तथा जो शिव, शान्त एवं परमशान्तरूप हैं, उन भगवान् शंकर को मेरा बारंबार नमस्कार है।

एकपाद्बहुनेत्राय एकशीर्ष्णे नमोऽस्तु ते।
रुद्राय क्षुद्रलुब्धाय संविभागप्रियाय च।। 97

एक पाद, अनेक नेत्र और एक मस्तकवाले आपको प्रणाम है। भक्तों की दी हुई छोटी-से-छोटी वस्तु के लिये भी लालायित रहनेवाले और उसके बदले में उन्हें अपार धनराशि बाँट देने की रुचि रखनेवाले आप भगवान् रुद्र को नमस्कार है।

पञ्चालाय सिताङ्गाय नमः शमशमाय च।
नमश्चण्डिकघण्टाय घण्टायाघण्टघण्टिने।। 98

जो इस विश्व का निर्माण करनेवाले कारीगर, गौरवर्ण के शरीरवाले तथा सदा शान्तरूप से रहनेवाले हैं, जिनकी घण्टा-ध्वनि शत्रुओं को भयभीत कर देती है तथा जो स्वयं ही घण्टानाद और अनाहतध्वनि के रूप में श्रवणगोचर होते हैं उन महेश्वर को प्रणाम है।

सहस्राध्मातघण्टाय घण्टामालाप्रियाय च।
प्राणघण्टाय गन्धाय नमः कलकलाय च।। 99

जिनके मन्दिर में लगे हुए घण्टों को सहस्रों आदमी बजाते हैं, घण्टों की माला जिन्हें प्रिय है, जिनके प्राण ही घण्टा के समान ध्वनि करते हैं, जो गन्ध और कोलाहलरूप हैं, उन भगवान् शिव को नमस्कार है।

हूंहूंहूंकारपाराय हूंहूंकारप्रियाय च।
नमः शमशमे नित्यं गिरिवृक्षालयाय च।। 100

आप हूं (क्रोध), हूं (हिंकार), हूं (आकाश, सूर्य और ईश्वर) –इन सबसे परे विद्यमान शान्तस्वरूप परब्रह्म हैं, 'हूं' 'हूं' करना आपको प्रिय लगता है, आप 'शान्त रहो, शान्त रहो' ऐसा कहकर सदा सबको अश्वासन देनेवाले हैं तथा पर्वतों पर और वृक्षों के नीचे निवास करते हैं। आपको प्रणाम है।

गर्भमांससृगालाय तारकाय तराय च।

नमो यज्ञाय यजिने हुताय प्रहुताय च।। 101

आप फल के भीतर के गुद्देरूप मांस के प्रलोभी शृगालरूप हैं। आप ही सबको तारनेवाले तथा तरण-तारण के साधन हैं। आप ही यज्ञ और आप ही यजमान हैं। आप ही हुत (हवन) और आप ही प्रहुत(अग्नि) हैं। आपको नमस्कार है।

यज्ञवाहाय दान्ताय तप्यायातपनाय च।

नमस्तटाय तटयाय तटानां पतये नमः।।102

आप ही यज्ञ के निर्वाहक अथवा उसे सब देवताओंतक पहुँचानेवाले अग्निदेव हैं। आप मन और इन्द्रियों को वश में रखनेवाले हैं। आप ही भक्तों का कष्ट देखकर संतप्त होनेवाले तथा शत्रुओं को संताप देनेवाले हैं। आप ही तट हैं। आप ही तटवर्ती नदी आदि हैं तथा आप ही तटों के पालक हैं। आपको नमस्कार है ।

अन्नदायान्नपतये नमस्त्वन्नभुजे तथा।

नमः सहस्रशीर्षाय सहस्रचरणाय च।। 103

आप ही अन्नदाता, अन्नपति और अन्न के भोक्ता हैं। आप के सहस्त्रों मस्तक और सहस्त्रों चरण हैं। आपको बारंबार प्रणाम है।

सहस्रोद्यतशूलाय सहस्रनयनाय च।

नमो बालार्कवर्णाय बालरूपधराय च।।104

आप अपने सहस्त्रों हाथों में सहस्त्रों शूल लिये रहते हैं। आपके सहस्त्रों नेत्र हैं। आपकी अङ्गकान्ति प्रात:कालीन सूर्य के समान देदीप्यमान है। आप बालकरूप धारण करनेवाले हैं। आपको नमस्कार है।

बालानुचरगोप्ताय बालक्रीडनकाय च।

नमो वृद्धाय लुब्धाय क्षुब्धाय क्षोभणाय च।। 105

आप श्रीकृष्णरूप से संगी-साथी बालकों के रक्षक तथा बालकों के साथ खेल करनेवाले हैं। आप सबकी अपेक्षा वृद्ध हैं। भक्ति और प्रेम के लोभी हैं। दुष्टों के पापाचार से क्षुब्ध हो उठते हैं और दुराचारियों को क्षोभ में डालनेवाले हैं। आपको नमस्कार है।

तरङ्गाङ्कितकेशाय मुञ्जकेशाय वै नमः ।

नमः षट्कर्मतुष्टाय त्रिकर्मनिरताय च ।। 106

आपके केश गङ्गा की तरङ्गों से अङ्कित तथा मुञ्ज के समान हैं। आपको नमस्कार है। आप ब्राह्मणों के छ: कर्म-अध्ययन-अध्यापन, यजन-याजन तथा दान और प्रतिग्रह से संतुष्ट रहते हैं; स्वयं यजन, अध्ययन और दानरूप तीन कर्मों में ही तत्पर रहते हैं। आपको मेरा प्रणाम है।

वर्णाश्रमाणां विधिवत् पृथक्कर्मनिवर्तिने।

नमो घुष्याय घोषाय नमः कलकलाय च।। 107

आप वर्ण और आश्रमों के भिन्न-भिन्न कर्मो का विधिवत् विभाग करनेवाले, जपनीय मन्त्ररूप, घोषस्वरूप तथा कोलाहलमय हैं। आपको बारंबार नमस्कार है।

श्वेतपिङ्गलनेत्राय कृष्णरक्तेक्षणाय च ।
प्राणभग्नाय दण्डाय स्फोटनाय कृशाय च ।। 108

आपके नेत्र श्वेत और पिङ्गलवर्ण के हैं, काले और लाल रंग के हैं। आप प्राणवायु(श्वास) को जीतनेवाले, दण्ड(आयुध) रूप, ब्रह्माण्डरूपी घट को फोड़नेवाले तथा कृश-शरीरधारी हैं। आपको नमस्कार है।

धर्मकामार्थमोक्षाणां कथनीयकथाय च ।
सांख्याय सांख्यमुख्याय सांख्ययोगप्रवर्तिने ।। 109

धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष देने के विषय में आपकी कीर्तिकथा वर्णन करने के योग्य है। आप सांख्यस्वरूप, सांख्ययोगियों में प्रधान तथा सांख्यशास्त्र को प्रवृत्त करनेवाले हैं। आपको प्रणाम है।

नमो रथ्यविरथ्याय चतुष्पथरथाय च।
कृष्णाजिनोत्तरीयाय व्यालयज्ञोपवीतिने।। 110

आप रथ पर बैठकर तथा बिना रथ के भी घूमनेवाले हैं। जल, अग्नि, वायु तथा आकाश-इन चारों मार्गों पर आपकी गति है। आप काले मृगचर्म को दुपट्टे की भाँति ओढ़नेवाले तथा सर्पमय यज्ञोपवीत धारण करनेवाले हैं। आपको प्रणाम है।

ईशान वज्रसंघात हरिकेश नमोऽस्तु ते।
त्र्यम्बकाम्बिकनाथाय व्यक्ताव्यक्त नमोऽस्तु ते।। 111

ईशान! आपका शरीर वज्र के समान कठोर है। हरिकेश ! आपको नमस्कार है। व्यक्ताव्यक्तस्वरूप परमेश्वर! आप त्रिनेत्रधारी तथा अम्बिका के स्वामी हैं। आपको नमस्कार है।

काम कामद कामघ्न तृप्तातृप्तविचारिणे।
सर्व सर्वद सर्वघ्न संध्याराग नमोऽस्तु ते।। 112

आप कामस्वरूप, कामनाओं को पूर्ण करनेवाले, कामदेव के नाशक, तृप्त और अतृप्त का विचार करनेवाले, सर्वस्वरूप, सब कुछ देनेवाले, सबके संहारक और संध्याकाल के समान रंगवाले हैं। आपको प्रणाम है।

महाबल महाबाहो महासत्त्व महाद्युते ।
महामेघचयप्रख्य महाकाल नमोऽस्तु ते ।। 113

महाबल! महाबाहो! महासत्त्व! महाद्युते! आप महान् मेघों की घटा के समान रंगवाले महाकालस्वरूप हैं। आपको नमस्कार है।

स्थूल जीर्णाङ्ग जटिले वल्कलाजिनधारिणे।
दीप्तसूर्याग्निजटिले वल्कलाजिनवाससे।
सहस्रसूर्यप्रतिम तपोनित्य नमोऽस्तु ते।। 114

आपका श्रीविग्रह स्थूल और जीर्ण है। आप जटाधारी हैं। वल्कल और मृगचर्म धारण करते हैं। देदीप्यमान सूर्य और अग्नि के समान ज्योतिर्मयी जटा से सुशोभित हैं। वल्कल और मृगचर्म ही आपके वस्त्र हैं। आप सहस्त्रों सूर्यों के समान प्रकाशमान और सदा तपस्या में संलग्न रहनेवाले हैं। आपको नमस्कार है।

उन्मादन शतावर्त गङ्गातोयार्द्रमूर्धज।
चन्द्रावर्त युगावर्त मेघावर्त नमोऽस्तु ते।। 115

आप जगत् को उन्माद(मोह) में डालनेवाले हैं। आपके मस्तक पर गङ्गाजी की सैंकड़ों लहरें और भँवरें उठती रहती हैं। आपके केश सदा गङ्गाजल से भीगे रहते हैं। आप चन्द्रमा को क्षय-वृद्धि के चक्कर में डालनेवाले हैं। आप ही युगों की पुनरावृत्ति करनेवाले और मेघों के प्रवर्तक हैं। आपको नमस्कार है।

त्वमन्नमन्नभोक्ता च अन्नदोऽन्नभुगेव च ।
अन्नस्रष्टा च पक्ता च पक्वभुक्पवनोऽनलः ।। 116

आप ही अन्न, अन्न के भोक्ता, अन्नदाता, अन्न का पालन करनेवाले, अन्नस्रष्टा, पाचक, पक्वान्नभोजी, प्राणवायु तथा जठरानलरूप हैं ।

जरायुजाण्डजाश्चैव स्वेदजाश्च तथोद्भिजाः ।
त्वमेव देवदेवेश भूतग्रामश्चतुर्विधः ।। 117

देवदेवेश्वर! जरायुज, अण्डज, स्वेदज तथा उद्भिज्ज-ये चार प्रकार के प्राणिसमूह आप ही हैं।

चराचरस्य स्रष्टा त्वं प्रतिहर्ता तथैव च।
त्वामाहुर्ब्रह्मविदुषो ब्रह्म ब्रह्मविदां वर।। 118

ब्रह्मवेत्ताओं में श्रेष्ठ! आप ही चराचर जीवों की सृष्टि तथा संहार करनेवाले हैं। ब्रह्मज्ञानी पुरुष आप ही को ब्रह्म कहते हैं।

मनसः परमा योनिः खं वायुर्ज्योतिषां निधिः।
ऋक्सामानि तथोङ्कारमाहुस्त्वां ब्रह्मवादिनः।। 119

वेदवादी विद्वान् आपको ही मन का परम कारण, आकाश, वायु, तेजकी निधि, ऋक्, साम तथा ॐकार बताते हैं।

हायिहायिहुवाहायिहावुहायि तथासकृत्।
गायन्ति त्वां सुरश्रेष्ठ सामगा ब्रह्मवादिनः ।। 120

सुरश्रेष्ठ! सामगान करनेवाले वेदवेत्ता पुरुष 'हा 3 यि, हा 3 यि, हु 3 वा, हा 3 यि, हा 3 वु, हा 3 यि' आदि का बारंबार उच्चारण करके निरन्तर आपकी ही महिमाका गान करते हैं।

यजुर्मयो ऋङ्मयश्च त्वमाहुतिमयस्तथा।
पठ्यसे स्तुतिभिश्चैव वेदोपनिषदां गणैः।। 121

यजुर्वेद और ऋग्वेद आपके ही स्वरूप हैं। आप ही हविष्य हैं। वेदों और उपनिषदों के समूह अपनी स्तुतियों द्वारा आपकी ही महिमा का प्रतिपादन करते हैं।

ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा वर्णावराश्च ये।
त्वमेव मेघसंघाश्च विद्युत्स्तनितगर्जितः।। 122

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र तथा अन्त्यज-ये आपके ही स्वरूप हैं। मेघों की घटा, बिजली, गर्जना और गड़गड़ाहट भी आप ही हैं।

संवत्सरस्त्वमृतवो मासो मासार्धमेव च।
युगं निमेषाः काष्ठास्त्वं नक्षत्राणि ग्रहाः कलाः।। 123

संवत्सर, ऋतु, मास, पक्ष, युग, निमेष, काष्ठा, नक्षत्र, ग्रह और कला भी आप ही हैं।

वृक्षाणां ककुदोऽसि त्वं गिरीणां शिखराणि च।
व्याघ्रो मृगाणां पततां तार्क्ष्योऽनन्तश्च भोगिनाम्।। 124

वृक्षों में प्रधान वट-पीपल आदि, पर्वतों में उनके शिखर, वन-जन्तुओं में व्याघ्र, पक्षियों में गरुड़ तथा सर्पों में अनन्त आप ही हैं।

क्षीरोदो ह्युदधीनां च यन्त्राणां धनुरेव च।
वज्रः प्रहरणानां च व्रतानां सत्यमेव च।। 125

समुद्रों में क्षीरसागर, यन्त्रों(अस्त्रों) में धनुष, चलाये जानेवाले आयुधों में वज्र और व्रतों में सत्य भी आप ही हैं।

त्वमेव द्वेष इच्छा च रागो मोहः क्षमाक्षमे।
व्यवसायो धृतिर्लोभः कामक्रोधौ जयाजयौ।। 126

आप ही द्वेष, इच्छा, राग, मोह, क्षमा, अक्षमा, व्यवसाय, धैर्य, लोभ, काम, क्रोध, जय तथा पराजय हैं।

त्वं गदी त्वं शरी चापी खट्वाङ्गी झर्झरी तथा।

छेत्ता भेत्ता प्रहर्ता त्वं नेता मन्ता पिता मतः।। 127

आप गदा, बाण, धनुष, खाट का अङ्ग तथा झर्झर नामक अस्त्र धारण करनेवाले हैं। आप छेदन, भेदन और प्रहार करनेवाले हैं। सत्पथ पर ले जानेवाले, शुभ का मनन करनेवाले तथा पिता माने गये हैं।

दशलक्षणसंयुक्तो धर्मोऽर्थः काम एव च।
गङ्गा समुद्राः सरितः पल्वलानि सरांसि च।। 128
लता वल्यस्तृणौषध्यः पशवो मृगपक्षिणः।
द्रव्यकर्मसमारम्भः कालः पुष्पफलप्रदः।। 129

दस लक्षणोंवाला धर्म तथा अर्थ और काम भी आप ही हैं। गङ्गा, समुद्र, नदियाँ, गड्ढे, तालाब, लता, वल्ली, तृण, ओषधि, पशु, मृग, पक्षी, द्रव्य और कर्मों के आरम्भ तथा फूल और फल देनेवाला काल भी आप ही हैं।

आदिश्चान्तश्च देवानां गायत्र्योंकार एव च।
हरितो रोहितो नीलः कृष्णो रक्तस्तथारुणः।
कद्रुश्च कपिलश्चैव कपोतो मेचकस्तथा।। 130

आप देवताओं के आदि और अन्त हैं। गायत्री-मन्त्र और ॐकार भी आप ही हैं। हरित, लोहित, नील, कृष्ण, रक्त, अरुण, कद्रु, कपिल, कबूतर के समान तथा मेचक(श्याम मेघ के समान)-ये दस प्रकार के रंग भी आपके ही स्वरूप हैं।

अवर्णश्च सुवर्णश्च वर्णकारो घनोपमः।
सुवर्णनामा च तथा सुवर्णप्रिय एव च।। 131

आप वर्णरहित होने के कारण अवर्ण और अच्छे वर्णवाले होने से सुवर्ण कहलाते हैं। आप वर्णों के निर्माता और मेघ के समान हैं। आपके नाम में सुन्दर वर्णों(अक्षरों) का उपयोग हुआ है, इसलिये आप सुवर्णनामा हैं तथा आपको श्रेष्ठ वर्ण प्रिय है।

त्वमिन्द्रश्च यमश्चैव वरुणो धनदोऽनलः।
उपप्लवश्चित्रभानुः स्वर्भानुर्भानुरेव च।। 132

आप ही इन्द्र, यम, वरुण, कुबेर, अग्नि, सूर्य-चन्द्र का ग्रहण, चित्रभानु(सूर्य), राहु और भानु हैं।

होत्रं होता च होम्यं च हुतं चैव तथा प्रभुः।
त्रिसौपर्णं तथा ब्रह्म यजुषां शतरुद्रियम्।। 133

होत्र (स्रुवा), होता, हवनीय पदार्थ, हवन-क्रिया तथा(उसके फल देनेवाले) परमेश्वर भी आप ही हैं। वेद की त्रिसौपर्ण नामक श्रुतियों में तथा यजुर्वेद के शतरुद्रिय-प्रकरण में जो बहुत से

वैदिक नाम हैं, वे सब आप ही के नाम हैं।

पवित्रं च पवित्राणां मङ्गलानां च मङ्गलम्।
गिरिको हिंडुको वृक्षो जीवः पुद्गल एव च॥ 134
प्राणः सत्त्वं रजश्चैव तमश्चाप्रमदस्तथा।
प्राणोऽपानः समानश्च उदानो व्यान एव च॥ 135
उन्मेषश्च निमेषश्च क्षुतं जृम्भितमेव च।
लोहितान्तर्गता दृष्टिर्महावक्त्रो महोदरः॥ 136

आप पवित्रों के भी पवित्र और मङ्गलों के भी मङ्गल हैं। आप ही गिरिक(अचेतन को भी चेतन करनेवाले), हिंडुक(गमनागमन करनेवाले), संसार-वृक्ष, जीव, शरीर, प्राण, सत्त्व, रज, तम, अप्रमद(स्त्रीरहित-ऊध्र्वरेता), प्राण, अपान, समान, उदान, व्यान, उन्मेष, निमेष(आँखों को खोलना-मींचना), छींकना और जँभाई लेना आदि चेष्टाएँ भी आप ही हैं। आप की अग्निमयी लाल रंग की दृष्टि भीतर छिपी हुई है। आपके मुख और उदर महान् हैं।

सूचीरोमा हरिश्मश्रुरूर्ध्वकेशश्चलाचलः।
गीतवादित्रतत्त्वज्ञो गीतवादनकप्रियः॥ 137

रोएँ सूई के समान हैं। दाढ़ी-मूछ काली है। सिर के बाल ऊपर की ओर उठे हुए हैं। आप चराचरस्वरूप हैं। गाने-बजाने के तत्त्व को जाननेवाले हैं। गाना-बजाना आपको अधिक प्रिय है।

मत्स्यो जलचरो जाल्योऽकलः केलिकलःकलिः।
अकालश्चातिकालश्च दुष्कालः काल एव च॥ 138

आप मत्स्य, जलचर और जालधारी घड़ियाल हैं। फिर भी अकल(बन्धन से परे) हैं। आप केलिकला से युक्त और कलहरूप हैं। आप ही अकाल, अतिकाल, दुष्काल तथा काल हैं।

मृत्युः क्षुरश्च कृत्यश्च पक्षोऽपक्षक्षयंकरः।
मेघकालो महादंष्ट्रः संवर्तकबलाहकः॥ 139

मृत्यु, क्षुर(छेदन करने का शस्त्र), कृत्य(छेदन करने योग्य), पक्ष(मित्र) तथा अपक्ष-क्षयंकर (शत्रुपक्ष का नाश करनेवाले) भी आप ही हैं। आप मेघ के समान काले, बड़ी-बड़ी दाढ़ोंवाले और प्रलयकालीन मेघ हैं।

घण्टोऽघण्टो घटी घण्टी चरुचेली मिलीमिली।
ब्रह्मकायिकमग्नीनां दण्डी मुण्डस्त्रिदण्डधृक्॥ 140

घण्ट(प्रकाशवान्), अघण्ट(अव्यक्त प्रकाशवाले), घटी(कर्मफल से युक्त करनेवाले), घण्टी(घण्टावाले), चरुचेली(जीवों के साथ क्रीड़ा करनेवाले) तथा मिलीमिली(कारणरूप से सबमें व्याप्त)-ये सब आप ही हैं। आप ही ब्रह्म, अग्नियों के स्वरूप, दण्डी, मुण्ड तथा त्रिदण्डधारी

हैं।

चतुर्युगश्चतुर्वेदश्चातुर्होत्रप्रवर्तकः।

चातुराश्रम्यनेता च चातुर्वर्ण्यकरश्च यः।। 141

चार युग और चार वेद आपके ही स्वरूप हैं तथा चार प्रकार के होतृ-कर्मों के प्रवर्तक आप ही हैं। आप चारों आश्रमों के नेता तथा चारों वर्णों की सृष्टि करनेवाले हैं।

सदा चाक्षप्रियो धूर्तो गणाध्यक्षो गणाधिपः।

रक्तमाल्याम्बरधरो गिरिशो गिरिकप्रियः।। 142

आप ही अक्षप्रिय, धूर्त, गणाध्यक्ष और गणाधिप आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। आप रक्त वस्त्र तथा लाल फूलों की माला पहनते हैं, पर्वतपर शयन करते और गेरुए वस्त्र से प्रेम रखते हैं।

शिल्पिकः शिल्पिनां श्रेष्ठः सर्वशिल्पप्रवर्तकः।

भगनेत्राङ्कुशश्चण्डः पूष्णो दन्तविनाशनः।। 143

आप ही शिल्पियों में सर्वश्रेष्ठ शिल्पी (कारीगर) तथा सब प्रकार की शिल्पकला के प्रवर्तक हैं। आप भगदेवता की आँख फोड़ने के लिये अङ्कुश, चण्ड (अत्यन्त कोप करनेवाले) और पूषा के दाँत नष्ट करनेवाले हैं।

स्वाहा स्वधा वषट्कारो नमस्कारो नमो नमः।

गूढव्रतो गुह्यतपास्तारकस्तारकामयः।। 144

स्वाहा, स्वधा, वषट्, नमस्कार और नमो नमः आदि पद आपके ही नाम हैं। आप गूढ़ व्रतधारी, गुप्त तपस्या करनेवाले, तारकमन्त्र और ताराओं से भरे हुए आकाश हैं।

धाता विधाता संधाता विधाता धारणोऽधरः।

ब्रह्मा तपश्च सत्यं च ब्रह्मचर्यमथार्जवम्।। 145

भूतात्मा भूतकृद्भूतो भूतभव्यभवोद्भवः।

भूर्भुवः स्वरितश्चैव ध्रुवो दान्तो महेश्वरः।। 146

धाता (धारण करनेवाले), विधाता (सृष्टि करनेवाले), संधाता (जोड़नेवाले), विधाता, धारण और अधर (आधाररहित) भी आप ही के नाम हैं। आप ब्रह्मा, तप, सत्य, ब्रह्मचर्य, आर्जव (सरलता), भूतात्मा (प्राणियों के आत्मा), भूतों की सृष्टि करनेवाले, भूत (नित्यसिद्ध), भूत, भविष्य और वर्तमान की उत्पत्ति के कारण, भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, ध्रुव (स्थिर), दान्त (दमनशील) और महेश्वर हैं।

दीक्षितोऽदीक्षितः क्षान्तो दुर्दान्तोऽदान्तनाशनः।

चन्द्रावर्तो युगावर्तः संवर्तः सम्प्रवर्तकः।। 147

दीक्षित (यज्ञ की दीक्षा लेनेवाले), अदीक्षित, क्षमावान्, दुर्दान्त, उद्दण्ड प्राणियों का नाश

करनेवाले, चन्द्रमा की आवृत्ति करनेवाले (मास), युगों की आवृत्ति करनेवाले (कल्प), संवर्त (प्रलय) तथा सम्प्रवर्तक (पुनः सृष्टि-संचालन करनेवाले) भी आप ही हैं।

कामो बिन्दुरणुः स्थूलः कर्णिकारस्रजप्रियः ।
नन्दीमुखो भीममुखः सुमुखो दुर्मुखोऽमुखः ।। 148
चतुर्मुखो बहुमुखो रणेष्वग्निमुखस्तथा ।
हिरण्यगर्भः शकुनिर्महोरगपतिर्विराट् ।। 149

आप ही काम, बिन्दु, अणु (सूक्ष्म) और स्थूलरूप हैं। आप कनेर के फूल की माला अधिक पसंद करते हैं। आप ही नन्दीमुख, भीममुख (भयंकर मुखवाले), सुमुख, दुर्मुख, अमुख (मुखरहित), चतुर्मुख, बहुमुख तथा युद्ध के समय शत्रु का संहार करने के कारण अग्निमुख (अग्नि के समान मुखवाले) हैं। हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा), शकुनि (पक्षी के समान असङ्ग), महान् सर्पों के स्वामी (शेषनाग) और विराट् भी आप ही हैं।

अधर्महा महापार्श्वश्चण्डधारो गणाधिपः।
गोनर्दो गोप्रतारश्च गोवृषेश्वरवाहनः।। 150
त्रैलोक्यगोप्ता गोविन्दो गोमार्गोऽमार्ग एव च।
श्रेष्ठः स्थिरश्च स्थाणुश्च निष्कम्पः कम्प एव च।। 151
दुर्वारणो दुर्विषहो दुःसहो दुरतिक्रमः।
दुर्धर्षो दुष्प्रकम्पश्च दुर्विषो दुर्जयो जयः।। 152
शशः शशाङ्कः शमनः शीतोष्णक्षुज्जराधिकृत्।
आधयो व्याधयश्चैव व्याधिहा व्याधिरेव च।। 153

आप अधर्म के नाशक, महापार्श्व, चण्डधार, गणाधिप, गोनर्द, गौओं को आपत्ति से बचानेवाले, नन्दी की सवारी करनेवाले, त्रैलोक्यरक्षक, गोविन्द (श्रीकृष्णरूप), गोमार्ग (इन्द्रियों के संचालक), अमार्ग (इन्द्रियों के अगोचर), श्रेष्ठ, स्थिर, स्थाणु, निष्कम्प, कम्प, दुर्वारण (जिनका सामना करना कठिन है, ऐसे), दुर्विषह (असह्य वेगवाले), दुःसह, दुर्लङ्घ्य, दुर्द्धर्ष, दुष्प्रकम्प, दुर्विष, दुर्जय, जय, शश (शीघ्रगामी), शशाङ्क (चन्द्रमा) तथा शमन (यमराज) हैं। सर्दी-गर्मी, क्षुधा, वृद्धावस्था तथा मानसिक चिन्ता को दूर करनेवाले भी आप ही हैं। आप ही आधि-व्याधि तथा उसे दूर करनेवाले हैं।

मम यज्ञमृगव्याधो व्याधीनामागमो गमः।
शिखण्डी पुण्डरीकाक्षः पुण्डरीकवनालयः।। 154
दण्डधारस्त्र्यम्बकश्च उग्रदण्डोऽण्डनाशनः।
विषाग्निपाः सुरश्रेष्ठः सोमपास्त्वं मरुत्पतिः।। 155

मेरे यज्ञरूपी मृग के वधिक तथा व्याधियों को लाने और मिटानेवाले भी आप ही हैं। (कृष्णरूप में) मस्तक पर शिखण्ड(मोरपङ्ख) धारण करने के कारण आप शिखण्डी हैं। आप कमल के समान नेत्रोंवाले, कमल के वन में निवास करनेवाले, दण्ड धारण करनेवाले, त्र्यम्बक, उग्रदण्ड और ब्रह्माण्ड के संहारक हैं। विषाग्नि को पी जानेवाले, देवश्रेष्ठ, सोमरस का पान करनेवाले और मरुद्गणों के स्वामी हैं।

अमृतपास्त्वं जगन्नाथ देवदेव गणेश्वरः।
विषाग्निपा मृत्युपाश्च क्षीरपाः सोमपास्तथा।
मधुश्च्युतानामग्रपास्त्वमेव तुषिताद्यपाः।। 156

देवाधिदेव! जगन्नाथ! आप अमृत पान करनेवाले और गणों के स्वामी हैं। विषाग्नि तथा मृत्यु से रक्षा करनेवाले और दूध एवं सोमरस का पान करनेवाले हैं। आप सुख से भ्रष्ट हुए जीवों के प्रधान रक्षक तथा तुषितनामक देवताओं के आदिभूत ब्रह्माजी का भी पालन करनेवाले हैं।

हिरण्यरेताः पुरुषस्त्वमेव
त्वं स्त्री पुमांस्त्वं च नपुंसकं च।
बालो युवा स्थविरो जीर्णदंष्ट्रस्त्वं
नागेन्द्र शक्रस्त्वं विश्वकृद्विश्वकर्ता।। 157
विश्वकृद् विश्वकृतां वरेण्यस्त्वं विश्ववाहो।
विश्वरूपस्तेजस्वी विश्वतोमुखः।
चन्द्रादित्यौ चक्षुषी ते हृदयं च पितामहः।। 158

आप ही हिरण्यरेता (अग्नि), पुरुष (अन्तर्यामी) तथा आप ही स्त्री, पुरुष और नपुंसक हैं। बालक, युवा और वृद्ध भी आप ही हैं। नागेश्वर! आप जीर्ण दाढ़ोंवाले और इन्द्र हैं। आप विश्वकृत् (जगत् के संहारक), विश्वकर्ता (प्रजापति), विश्वकृत् (ब्रह्माजी), विश्व की रचना करनेवाले प्रजापतियों में श्रेष्ठ, विश्व का भार वहन करनेवाले, विश्वरूप, तेजस्वी और सब ओर मुखवाले हैं। चन्द्रमा और सूर्य आपके नेत्र तथा पितामह ब्रह्मा आपके हृदय हैं।

महोदधिः सरस्वती वाग् बलमनलोऽ-
निलः अहोरात्रं निमेषोन्मेषकर्म।। 159

आप ही समुद्र हैं, सरस्वती आपकी वाणी हैं, अग्नि और वायु बल हैं तथा आपके नेत्रों का खुलना और बंद होना ही दिन और रात्रि हैं।

न ब्रह्मा न च गोविन्दः पौराणा ऋषयो न ते।
माहात्म्यं वेदितुं शक्ता याथातथ्येन ते शिव।। 160

शिव! आपके माहात्म्य को ठीक-ठीक जानने में ब्रह्मा, विष्णु तथा प्राचीन ऋषि भी समर्थ

नहीं हैं।

या मूर्तयः सुसूक्ष्मास्ते न मह्यं यान्ति दर्शनम्।
त्राहि मां सततं रक्ष पिता पुत्रमिवौरसम्।। 161

आपके जो सूक्ष्म रूप हैं, वे हमलोगों की दृष्टि में नहीं आते। भगवन्! जैसे पिता अपने औरस पुत्र की रक्षा करता है, उसी तरह आप सर्वदा मेरी रक्षा करें।

रक्ष मां रक्षणीयोऽहं तवानघ नमोऽस्तु ते।
भक्तानुकम्पी भगवान् भक्तश्चाहं सदा त्वयि।। 162

अनघ! मैं आपके द्वारा रक्षित होने योग्य हूँ, आप अवश्य मेरी रक्षा करें, मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप भक्तों पर दया करनेवाले भगवान् हैं और मैं सदा के लिये आपका भक्त हूँ।

यः सहस्राण्यनेकानि पुंसामावृत्य दुर्दृशः।
तिष्ठत्येकः समुद्रान्ते स मे गोप्तास्तु नित्यशः।। 163

जो हजारों मनुष्यों पर माया का परदा डालकर सबके लिये दुर्बोध हो रहे हैं, अद्वितीय हैं तथा समुद्र के समान कामनाओं का अन्त होने पर प्रकाश में आते हैं, वे परमेश्वर नित्य मेरी रक्षा करें।

यं विनिद्रा जितश्वासाः सत्त्वस्थाः संयतेन्द्रियाः।
ज्योतिः पश्यन्ति युञ्जानास्तस्मै योगात्मने नमः।। 164

जो निद्रा के वशीभूत न होकर प्राणों पर विजय पा चुके हैं और इन्द्रियों को जीतकर सत्त्वगुण में स्थित हैं, ऐसे योगीलोग ध्यान में जिस ज्योतिर्मय तत्त्व का साक्षात्कार करते हैं, उस योगात्मा परमेश्वर को नमस्कार है।

जटिले दण्डिने नित्यं लम्बोदरशरीरिणे।
कमण्डलुनिषङ्गाय तस्मै ब्रह्मात्मने नमः।। 165

जो सदा जटा और दण्ड धारण किये रहते हैं, जिनका उदर और शरीर विशाल है तथा कमण्डलु ही जिनके लिये तरकस का काम देता है, ऐसे ब्रह्माजी के रूप में विराजमान भगवान् शिव को प्रणाम है।

यस्य केशेषु जीमूता नद्यः सर्वाङ्गसंधिषु।
कुक्षौ समुद्राश्चत्वारस्तस्मै तोयात्मने नमः।। 166

जिनके केशों में बादल, शरीर की संधियों में नदियाँ और उदर में चारों समुद्र हैं, उन जलस्वरूप परमात्मा को नमस्कार है।

सम्भक्ष्य सर्वभूतानि युगान्ते पर्युपस्थिते।
यः शेते जलमध्यस्थस्तं प्रपद्येऽम्बुशायिनम्।। 167

जो प्रलयकाल उपस्थित होने पर सब प्राणियों का संहार करके एकार्णव के जल में शयन करते

हैं, उन जलशायी भगवान् की मैं शरण लेता हूँ।

प्रविश्य वदनं राहोर्यः सोमं पिबते निशि।
ग्रसत्यर्कं च स्वर्भानुर्भूत्वा मां सोऽभिरक्षतु।। 168

जो रात में राहु के मुख में प्रवेश करके स्वयं चन्द्रमा के अमृत का पान करते हैं तथा स्वयं ही राहु बनकर सूर्य पर ग्रहण लगाते हैं, वे परमात्मा मेरी रक्षा करें।

ये चानुपतिता गर्भा यथा भागानुपासते।
नमस्तेभ्यः स्वधा स्वाहा प्राप्नुवन्तु मुदन्तु ते।। 169

ब्रह्माजी के बाद उत्पन्न होनेवाले जो देवता और पितर बालक की भाँति यज्ञ में अपने-अपने भाग ग्रहण करते हैं, उन्हें नमस्कार है। वे 'स्वाहा और स्वधा' के द्वारा अपने भाग प्राप्त करके प्रसन्न हों।

येऽङ्गुष्ठमात्राः पुरुषा देहस्थाः सर्वदेहिनाम्।
रक्षन्तु ते हि मां नित्यं नित्यं चाप्याययन्तु माम्।। 170

जो अङ्गुष्ठमात्र जीव के रूप में सम्पूर्ण देहधारियों के भीतर विराजमान हैं, वे सदा मेरी रक्षा और वृद्धि करें।

ये न रोदन्ति देहस्था देहिनो रोदयन्ति च।
हर्षयन्ति न हृष्यन्ति नमस्तेभ्योऽस्तु नित्यशः।। 171

जो देह के भीतर रहते हुए स्वयं न रोकर देहधारियों को ही रुलाते है, स्वयं हर्षित न होकर उन्हें ही हर्षित करते हैं, उन सब रुद्रों को मैं नित्य नमस्कार करता हूँ ।

ये नदीषु समुद्रेषु पर्वतेषु गुहासु च।
वृक्षमूलेषु गोष्ठेषु कान्तारे गहनेषु च।। 172
चतुष्पथेषु रथ्यासु चत्वरेषु तटेषु च।
हस्त्यश्वरथशालाशु जीर्णोद्यानालयेषु च।। 173
येषु पञ्चसु भूतेषु दिशासु विदिशासु च।
चन्द्रार्कयोर्मध्यगता ये च चन्द्रार्करश्मिषु।। 174
रसातलगता ये च ये च तस्मै परं गताः।
नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्यो नमस्तेभ्योऽस्तु नित्यशः।। 175

नदी, समुद्र, पर्वत, गुहा, वृक्षों की जड़, गोशाला, दुर्गम पथ, वन, चौराहे, सड़क, चौतरे, चबूतरे, किनारे, हस्तिशाला, अश्वशाला, रथशाला, पुराने बगीचे, जीर्ण गृह, पञ्चभूत, दिशा, विदिशा, चन्द्रमा, सूर्य तथा उन-उनकी किरणों में, रसातल में और उससे भिन्न स्थानों में भी जो अधिष्ठातृ देवता के रूप में व्याप्त हैं, उन सबको सदा नमस्कार है, नमस्कार है, नमस्कार है।

येषां न विद्यते संख्या प्रमाणं रूपमेव च।

असंख्येयगुणा रुद्रा नमस्तेभ्योऽस्तु नित्यशः।। 176

जिनकी संख्या, प्रमाण और रूप की सीमा नहीं है, जिनके गुणों की गिनती नहीं हो सकती, उन रुद्रों को मैं सदा नमस्कार करता हूँ।

सर्वभूतकरो यस्मात् सर्वभूतपतिर्हरः।
सर्वभूतान्तरात्मा च तेन त्वं न निमन्त्रितः।। 177

आप सम्पूर्ण भूतों के जन्मदाता, सबके पालक और संहारक हैं तथा आप ही समस्त प्राणियों के अन्तरात्मा हैं, इसीलिये मैंने आपको पृथक् निमन्त्रण नहीं दिया।

त्वमेव हीज्यसे यस्माद् यज्ञैर्विविधदक्षिणैः।
त्वमेव कर्ता सर्वस्य तेन त्वं न निमन्त्रितः।। 178

नाना प्रकार की दक्षिणाओंवाले यज्ञों द्वारा आप ही का यजन किया जाता है और आप ही सबके कर्ता हैं, इसीलिये मैंने आपको अलग निमन्त्रण नहीं दिया।

अथवा मायया देव सूक्ष्मया तव मोहितः।
एतस्मात् कारणाद् वापि तेन त्वं न निमन्त्रितः।। 179

अथवा देव ! आपकी सूक्ष्म माया से मैं मोह में पड़ गया था, इस कारण से भी मैंने आपको निमन्त्रण नहीं दिया।

प्रसीद मम भद्रं ते भव भावगतस्य मे।
त्वयि मे हृदयं देव त्वयि बुद्धिर्मनस्त्वयि।। 180

भगवन् भव ! आपका भला हो, मैं भक्तिभाव के साथ आपकी शरण में आया हूँ, इसलिये अब मुझ पर प्रसन्न होइये। मेरा हृदय, मेरी बुद्धि और मेरा मन सब आप में समर्पित हैं।

स्तुत्वैवं स महादेवं विरराम प्रजापतिः।
भगवानपि सुप्रीतः पुनर्दक्षमभाषत।। 181

इस प्रकार महादेवजी की स्तुति करके प्रजापति दक्ष चुप हो गये। तब भगवान् शिव ने भी बहुत प्रसन्न होकर दक्ष से कहा।

परितुष्टोऽस्मि ते दक्ष स्तवेनानेन सुव्रत।
बहुनात्र किमुक्तेन मत्समीपे भविष्यसि।। 182

'उत्तम व्रत का पालन करनेवाले दक्ष! तुम्हारे द्वारा की हुई इस स्तुति से मैं बहुत संतुष्ट हूँ। यहाँ अधिक क्या कहूँ, तुम मेरे निकट निवास करोगे।

अश्वमेधसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च।
प्रजापते मत्प्रसादात् फलभागी भविष्यसि।। 183

'प्रजापते ! मेरे प्रसाद से तुम्हें एक हजार अश्वमेध तथा एक सौ वाजपेय यज्ञ का फल मिलेगा'।

अथैनमब्रवीद् वाक्यं लोकस्याधिपतिर्भवः।
आश्वासनकरं वाक्यं वाक्यविद्वाक्यसम्मतम्।। 184

तदनन्तर वाक्यविशारद, लोकनाथ भगवान् शिव ने प्रजापति को सान्त्वना देनेवाला युक्तियुक्त एवं उत्तम वचन कहा–

दक्ष दक्ष न कर्तव्यो मन्युर्विघ्नमिमं प्रति।
अहं यज्ञहरस्तुभ्यं दृष्टमेतत् पुरातनम्।। 185

'दक्ष! दक्ष! इस यज्ञ में जो विघ्न डाला गया है, इसके लिये तुम खेद न करना। मैंने पहले कल्प में भी तुम्हारे यज्ञ का विध्वंस किया था। यह घटना भी पूर्वकल्प के अनुसार ही हुई है।

भूयश्च ते वरं दद्मि तं त्वं गृह्णीष्व सुव्रत।
प्रसन्नवदनो भूत्वा तदिहैकमनाः शृणु।। 186

'सुव्रत ! मैं पुनः तुम्हें वरदान देता हूँ, तुम इसे स्वीकार करो और प्रसन्नवदन तथा एकाग्रचित्त होकर यहाँ मेरी यह बात सुनो।

वेदात् षडङ्गादुद्धृत्य सांख्ययोगाच्च युक्तितः।
तपः सुतप्तं विपुलं दुश्चरं देवदानवैः।। 187

'पूर्वकाल में षडङ्ग वेद, सांख्ययोग और तर्क से निश्चत करके देवताओं और दानवों ने जिस विशाल एवं दुष्कर तप का अनुष्ठान किया था(उससे भी उत्तम व्रत मैं तुम्हें बता रहा हूँ)।

अपूर्वं सर्वतोभद्रं सर्वतोमुखमव्ययम्।
अब्दैर्दशाहसंयुक्तं गूढमप्राज्ञनिन्दितम्।। 188
वर्णाश्रमकृतैर्धर्मैर्विपरीतं क्वचित्समम्।
गतान्तैरध्यवसितमत्याश्रममिदं व्रतम्।। 189
मया पाशुपतं दक्ष शुभमुत्पादितं पुरा।
तस्य चीर्णस्य तत् सम्यक् फलं भवति पुष्कलम्।
तच्चास्तु ते महाभाग त्यज्यतां मानसो ज्वरः।। 190

'दक्ष! मैंने पूर्वकाल में एक शुभकारक पाशुपत नामक व्रत को प्रकट किया था, जो अपूर्व है, साधन और सिद्धि सभी अवस्थाओं में सब प्रकार से कल्याणकारी, सर्वतोमुखी(सभी वर्णों और आश्रमों के अनुकूल) तथा मोक्ष का साधक होने के कारण अविनाशी है। वर्षोतक पुण्यकर्म करने और यम-नियम नामक दस साधनों को अभ्यास में लाने से उसकी उपलब्धि होती है। वह गूढ़ है। मूर्ख मनुष्य उसकी निन्दा करते हैं। वह समस्त वर्णधर्म और आश्रम-धर्म के अनुकूल, सम और किसी-किसी

अंश में विपरीत भी है। जिन्हें सिद्धान्त का ज्ञान है, उन्होंने इसे अपनाने का पूर्ण निश्चय कर लिया है। यह व्रत सभी आश्रमों से बढ़कर है। इसके अनुष्ठान से उत्तम एवं प्रचुर फल की प्राप्ति होती है। महाभाग! उस पशुपत व्रत के अनुष्ठान का फल तुम्हें प्राप्त हो। अब तुम अपनी मानसिक चिन्ता का परित्याग कर दो।'

एवमुक्त्वा महादेवः सपत्नीकः सहानुगः।
अदर्शनमनुप्राप्तो दक्षस्यामितविक्रमः।। 191

दक्ष से ऐसा कहकर पत्नी और पार्षदोंसहित अमित पराक्रमी महादेवजी वहीं अन्तर्धान हो गये।

दक्षप्रोक्तं स्तवमिमं कीर्तयेद् यः शृणोति वा।
नाशुभं प्राप्नुयात् किंचिद् दीर्घमायुरवाप्नुयात्।। 192

जो मनुष्य दक्ष के द्वारा कहे हुए इस स्तोत्र का कीर्तन अथवा श्रवण करेगा, उसे कोई अमङ्गल नहीं प्राप्त होगा। वह दीर्घ आयु प्राप्त करता है।

यथा सर्वेषु देवेषु वरिष्ठो भगवाञ्छिवः।
तथा स्तवो वरिष्ठोऽयं स्तवानां ब्रह्मसम्मितः।। 193

जैसे भगवान् शिव सब देवताओं में श्रेष्ठ हैं, उसी प्रकार यह वेदतुल्य स्तोत्र सभी स्तुतियों में श्रेष्ठ है।

यशोराज्यसुखैश्वर्यकामार्थधनकाङ्क्षिभिः।
श्रोतव्यो भक्तिमास्थाय विद्याकामैश्च यत्नतः।। 194

यश, राज्य, सुख, ऐश्वर्य, काम, अर्थ, धन और विद्या की इच्छा रखनेवाले पुरुषों को भक्तिभाव का आश्रय लेकर यत्नपूर्वक इस स्तोत्र का श्रवण करना चाहिये।

व्याधितो दुःखितो दीनश्चोरग्रस्तो भयार्दितः।
राजकार्याभियुक्तो वा मुच्यते महतो भयात्।। 195

रोगी, दुखी, दीन, चोर के हाथ में पड़ा हुआ, भयभीत तथा राजकार्य का अपराधी मनुष्य भी इस स्तोत्र का पाठ करने से महान् भय से छुटकारा पा जाता है।

अनेनैव तु देहेन गणानां समतां व्रजेत्।
तेजसा यशसा चैव युक्तो भवति निर्मलः।। 196

इतना ही नहीं, वह इसी शरीर से भगवान् शिव के गणों की समानता प्राप्त कर लेता है तथा तेज और यश से सम्पन्न होकर निर्मल हो जाता है ।

न राक्षसाः पिशाचा व न भूता न विनायकाः।
विघ्नं कुर्युर्गृहे तस्य यत्रायं पठ्यते स्तवः।। 197

जिसके यहाँ इस स्तोत्र का पाठ होता है, उसके घर में राक्षस, पिशाच, भूत और विनायक

कभी कोई विघ्न नहीं करते हैं ।

शृणुयाच्चैव या नारी तद्भक्ता ब्रह्मचारिणी।
पितृपक्षे भर्तृपक्षे पूज्या भवति देववत्।। 198

जो नारी भगवान् शङ्कर में भक्तिभाव रखकर ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई इस स्तोत्र को सुनती है, वह पितृकुल और पतिकुल में देवता के समान आदरणीय होती है।

शृणुयाद् यः स्तवं कृत्स्नं कीर्तयेद् वा समाहितः।
तस्य सर्वाणि कर्माणि सिद्धिं गच्छन्त्यभीक्ष्णशः।। 199

जो एकाग्रचित्त होकर इस सम्पूर्ण स्तोत्र को सुनता अथवा पढ़ता है, उसके सारे कार्य सदा ही सिद्ध होते रहते हैं।

मनसा चिन्तितं यच्च यच्च वाचानुकीर्तितम्।
सर्वं सम्पद्यते तस्य स्तवस्यास्यानुकीर्तनात्।। 200

वह मन से जिस वस्तु के लिये चिन्तन करता है अथवा वाणी से जिस मनोरथ की याचना करता है, उसका वह सारा अभीष्ट इस स्तोत्र के बार-बार पाठ से सिद्ध हो जाता है।

देवस्य च गुहस्यापि देव्या नन्दीश्वरस्य च।
बलिं सुविहितं कृत्वा दमेन नियमेन च।। 201
ततस्तु युक्तो गृह्णीयान्नामान्याशु यथाक्रमम्।
ईप्सिताल्लँभते सोऽर्थान् भोगान् कामांश्च मानवः।। 202
मृतश्च स्वर्गमाप्नोति तिर्यक्षु च न जायते।
इत्याह भगवान् व्यासः पराशरसुतः प्रभुः।। 203

मनुष्य को चाहिये कि वह इन्द्रियों को संयम में रखकर शौच-संतोष आदि नियमों का पालन करते हुए महादेवजी, कार्तिकेय, पार्वतीदेवी और नन्दिकेश्वर को विधिपूर्वक पूजोपहार समर्पित करे, फिर एकाग्रचित्त होकर क्रमशः इन सहस्र नामों का पाठ करे। ऐसा करने से मनुष्य शीघ्र ही मनोवाञ्छित पदार्थों, भोगों और कामनाओं को प्राप्त कर लेता है तथा मृत्यु के पश्चात् स्वर्ग में जाता है। उसे पशु-पक्षी आदि की योनि में जन्म नहीं लेना पड़ता है। इस प्रकार सर्वसमर्थ पराशरनन्दन भगवान् व्यासजी ने इस स्तोत्र का माहात्म्य बतलाया है।

इस प्रकार श्रीमहाभारत शान्तिपर्व के अन्तर्गत मोक्षधर्मपर्व में दक्ष द्वारा कथित शिवसहस्रनामस्तोत्रविषयक दोसौचौरासीवाँ अध्याय पूरा हुआ।

(उपर्युक्त सहस्रनाम गीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित सटीक महाभारत के शान्तिपर्व से लिया गया है।)

❁❁❁❁❁❁